ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र नवम्बर 2017 (द्वितीय)

आर्यजगत् के ओजस्वी, क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता एवं उद्‌भट विद्वान्

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य

Email : aryapsharyana@yahoo.in Visit us : www.apsharyana.org

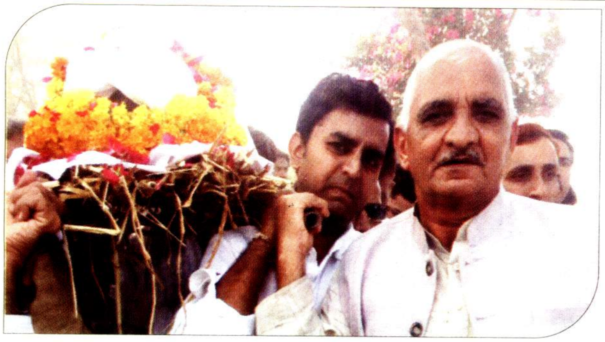

आचार्य ज्ञानेश्वर जी की शव यात्रा में उनके पार्थिव शरीर को कन्धा देते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी की शव यात्रा में उनके पार्थिव शरीर को कन्धा देते हुए श्री रमेश आर्य, महात्मा वेदपाल आर्य व अन्य।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन ।

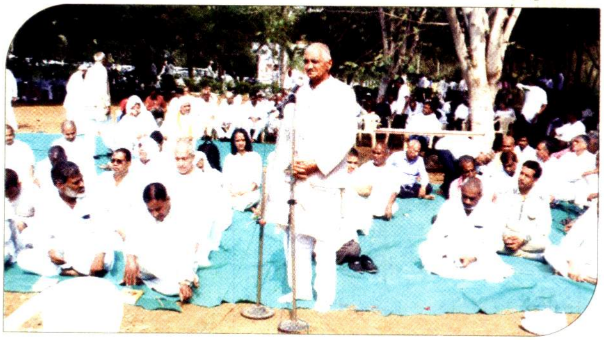

शोक सभा को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

आर्य सम्मेलन आर्य समाज मंदिर प्रेम नगर, सै. 2, 6 एवं 7 बहादुरगढ़ में उपस्थित जनसमूह।

आर्य सम्मेलन आर्य समाज मंदिर प्रेम नगर, सै. 2, 6 एवं 7 बहादुरगढ़ में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य व अन्य।

आर्य समाज दौंगड़ा अहीर के वार्षिक उत्सव में उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज दौंगड़ा अहीर के वार्षिक उत्सव में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 20

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

नवम्बर, 2017 (द्वितीय)
16 से 30 नवम्बर, 2017 तक

इस अंक में....

1. अन्तःकरण व प्राण-अपान का रक्षक प्रभु 2
2. ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है भारत में 4
3. आचार्य ज्ञानेश्वर जी की जीवन यात्रा 6
4. भक्त की दृष्टि 8
5. देशभर में चलाई याज्ञिक परिवार की मुहिम 10
6. आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः भी चले गए 11
7. प्रेरक वचन 11
8. ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन क्यों किया? 12
9. समाचार-प्रभाग 14

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

अन्त:करण व प्राण-अपान का रक्षक प्रभु

❑ महात्मा चैतन्यमुनि, महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०)

प्राणपा मे अपानपा:, चक्षुषा: श्रोत्रपाश्चावाचो मे विश्वभेषजो, मनसोऽसि विलायक: (यजु० 20.34) हे परमेश्वर! तू मेरे प्राण का रक्षक, अपान का रक्षक, चक्षु का रक्षक और श्रोत्र का रक्षक है, मेरी वाणी के सब रोगों की चिकित्सा करने वाला तथा मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला और आत्मा में लीन कराने वाला तू ही है। जिस प्रकार परमात्मा सारे ब्रह्माण्ड का पालन करने वाले हैं, वैसे ही हमारी इस छोटी-सी नगरी को भी सजाने-संवारने और पालन करने वाले प्रभु ही हैं। परमात्मा ने हमें इतना सब कुछ दिया है कि और कुछ भी मांगने की आवश्यकता ही नहीं है-'**विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधस:। सवितारं नृचक्षसम्॥**' (यजु० 30.4) प्रभु ने हमें कर्मानुसार विभाजित करके बहुत से अद्भुत साधन दे रखे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इनका सदुपयोग करें। प्रभु ने हमें वाणी, हाथ, पैर, उपस्थ और गुदा ये पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। इनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, रसना और त्वचा ये पांच ज्ञानेन्द्रियां दी हैं और वह प्रभु ही इन सबका रक्षक भी है। प्रभु को प्राण व अपान का रक्षक बताया गया है। इन इन्द्रियों आदि का संचालन प्राण के द्वारा ही होता है इसलिए कहा गया है कि प्रभु आप मेरे प्राण और अपान के रक्षक हैं। मुख्य पांच प्राणों द्वारा जो संचालन किया जा रहा है वह इस प्रकार है कि प्राण-आंख, कान, मुख, नासिका आदि ऊर्ध्व अंगों का संचालन करता है। अपान-गुदा, उपस्थ तथा मल त्यागादि की समस्त क्रिया का संचालन करता है। समान-पेट, नाभि, जठराग्नि...भोजनादि के पाचन क्रिया का संचालन करता है। व्यान-हृदय से प्रसूत समस्त नाड़ियों में परिक्रमा कराता हुआ रक्त-शुद्धि का कार्य करता है और उदान-101 नाड़ियों में से एक द्वारा ऊपर जाने वाले प्राण का नाम उदान है, सूक्ष्म-शरीर सहित जीव को भिन्न-भिन्न स्थानों में पहुँचाता है। ब्रह्माण्ड में सूर्य प्राण है। पृथिवी अपान, आकाश समान, वायु व्यान और अग्नि उदान है।

प्रभु ने हमें पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां दीं जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं मगर इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण अन्त:करण भी दिया है। यह मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार है। जिस प्रकार प्रभु प्राण-अपान एवं कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का रक्षक है उसी प्रकार अन्त:करण का भी प्रभु ही रक्षक है। वही (मनस: वलायक असि) इस मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला है और आत्मा में लीन कराने वाला है....यजुर्वेद के 34वें अध्याय के छ: मन्त्रों में इस मन की विलक्षणता और अद्भुत शक्ति का विस्तार से विवेचन किया गया है। वहाँ इसे **यज्जाग्रतो....** जागते हुए भी नहीं बल्कि सोते हुए भी दूर-दूर तक जाने वाला बताया है। उसे **हृत्प्रतिष्ठिम्** हृदय से प्रतिष्ठित बताया है। उसे **सुसारथि**-उत्तम सारथी कहा है। उसे **दैवम्** अर्थात् दिव्यता से परिपूर्ण तथा 'देव' अर्थात् आत्मा का प्रमुख साधन बताया है। यहाँ इस बात को इस प्रकार से समझना चाहिए कि जैसे आँख रूप उपकरण हैं वैसे ही मन आत्मदर्शन का उपकरण है। मन को **प्रज्ञानम्**-प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त कराने वाला बताया है। मन के बिना प्रकृष्ट-ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि आंख देख सकती है, कान सुन सकते हैं मगर आत्मदर्शन केवल मन ही करवा सकता है। आगे इस मन्त्र को **चेत:** अर्थात् आत्म-चेतना का साधक बताया है। यह मन ही **धृतिश्च**-धैर्य का साधन है....कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत...., इस मन को अमृतं ज्योति:-अमरत्व की ज्योति देने का साधन भी बताया है। मन के उपरोक्त गुणों पर चिन्तन और मनन करके हमें मन की इन समस्त शक्तियों का प्रयोग करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। हम मन की इन शक्तियों को पहचान लें तो कोई कारण नहीं कि हम जीवन में स्वयं को निराश, हताश और असहाय अनुभव करें। वास्तव में व्यक्ति अपने भीतर छिपी इन शक्तियों को पहचान ही नहीं पाता है, इसीलिए वह स्वयं को प्रभु का उपासक नहीं बना पाता है और न ही स्वयं को सुरक्षित समझता है।

उपरोक्त वेदमन्त्र में यह भी कहा गया है कि वह परमात्मा ही मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला तथा आत्मा में लीन करने वाला है तथा वेद में अन्यत्र कहा गया है –

इदं सवितर्वि जानीहि षड्यमा एक एकजः। तस्मिन्हापित्वमिच्छन्ते य एषामेक एकजः॥ (अथर्व० 10.8.5) हे जीव! तू यह समझ ले कि पांच ज्ञानेन्द्रियां और एक मन ये छः परस्पर जोड़े के रूप में रहने वाले हैं। अकेली आंख नहीं देखती है बल्कि वह तभी देखती हैं जब मन उसके साथ जुड़ता है, उसी प्रकार कान नहीं सुनते बल्कि ये तभी सुनते हैं जब मन जुड़ता है....और मन भी उस एक आत्मा के सम्पर्क में ही कार्य कर पाता है। आत्मा का निवास जब तक है तभी तक इनका कार्यकलाप चलता है, आत्मा के निकल जाने पर इनका संगतिकरण भी बिखर जाता है....इसीलिए कहा जाता है कि जब तक आत्मा और आत्मा के समस्त उपकरण ठीक ढंग से कार्य नहीं करेंगे तब तक जीवन के कार्य कलाप नहीं चल सकते हैं। ये सब उपकरण क्रमशः सूक्ष्मता लिए हुए हैं। इसीलिए यह भी कहा जाता है कि कर्मेन्द्रियां स्थूल हैं, मगर ज्ञानेन्द्रियां सूक्ष्म हैं। उनसे भी सूक्ष्म मन और मन से भी सूक्ष्म बुद्धि है। बुद्धि से भी सूक्ष्म चित्त और चित्त से भी सूक्ष्म यह आत्मा है। मन को शिवसंकल्पी बनाना चाहिए। बुद्धि को निर्णयात्मक बनाना चाहिए। क्योंकि **'संशयात्मा विनश्यति'** (गीता 4.40) सन्देहयुक्त बुद्धि वाले का विनाश हो जाता है। मुख्यतः ज्ञान स्वाभाविक और नैमित्तिक दो प्रकार का होता है और फिर नैमित्तिक के भी अभावात्मक, संशयात्मक, भ्रमात्मक और निश्चयात्मक भेद बताए गए हैं। हमें अपनी बुद्धि को निश्चयात्मक ज्ञान तक पहुंचाना है, यही बुद्धि की श्रेष्ठता है। हमारी बुद्धि को विधि और निषेध का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए। सत्य बोलो यह विधि है निषेध स्वयं हो गया कि असत्य नहीं बोलना, वहाँ जाओ का मतलब यह भी हो गया कि और कहीं मत जाओ। हमारे ज्ञान क्रिया से जुड़ा होना चाहिए। हमें कुपथ-सुपथ, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, योग-भोग का विचार करके किसी निर्णय तक तो पहुंचना है मगर उस निर्णय को आगे व्यवहार में लाना है। बिना व्यवहार के बुद्धि का निर्णय किसी काम का नहीं।

हमारा चित्त अति सूक्ष्म है तथा वही भूत एवं भविष्य का स्मरण रखने वाला है। यदि गहराई से देखें तो पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय अर्थात् गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द का ज्ञान इसी से होता है। मन का संकल्प-विकल्प व्यवहार, बुद्धि का सन्देह व निर्णय जैसे भूतकाल में अनुभव किए वर्तमान में किए जा रहे हैं और भविष्य में किए जाने वाले हैं या जिन पर लक्ष्य व ध्यान है-ये सब चित्त के अधीन हैं- 'येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहितमृतेन सर्वम्। ये यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥' इस चित्त के द्वारा ही सप्तहोताओं अर्थात् दो कान, दो आंखें, दो नासिका छिद्र और मुख का यज्ञ चलता है। जो व्यक्ति अयुक्त कर्मों का बुरा फल तथा पुण्य कर्मों का श्रेष्ठ फल भूल जाता है उसका वर्तमान भी नहीं बनता है। पिछले निकृष्ट कर्मों का त्याग और पुण्य कर्मों का आचरण करके अपने वर्तमान को बनानेवाला ही सुखी है। चित्त से उपयोग वर्तमान का ही करना है क्योंकि भूत चला गया और भविष्य अभी आने वाला है, उन्हें पकड़ना कठिन है मगर वर्तमान को हम पकड़ सकते हैं....चित्त-साक्षी की स्मृति अर्थात् स्व-स्वरूप के प्रति जागरूकता जितनी अधिक बनी रहेगी उतना ही अधिक हम प्रभु-प्रदत्त उपकरणों को सदुपयोग क र सकते हैं और जितना हो इनका सदुपयोग करेंगे उतना ही प्रभु हमारे रक्षक बनते चले जायेंगे।

मुक्तक

ग़मों की झंझाओं में भी मुस्कराते रहे,
रोशनी के लिए खुद दिल को जलाते रहे।
शिखण्डियों की फौज़ राहों में खड़ी थी-
हम चुपचाप भीष्म का धर्म निभाते रहे॥

परम्पराएं हमारी सब श्मशान होती रही,
संस्कृति अहर्निश गुमनाम होती रही।
नेता तो रहे अपने परकोटों में सुरक्षित-
इधर बस्ती उजड़कर सुनसान होती रही॥

बुजुर्ग इस बस्ती के लगता अब सठिया रहे हैं,
हंसों के सभी सिंहासन बगुले हथिया रहे हैं।
उन्होंने जरूर कोई काम निकालना होगा हमसे-
मधु मिश्रित वाणी में जा ऐसे बतिया रहे हैं॥

अभिशाप दिए जिनकी भी की है बन्दगी हमने,
विरानियां दी जिनको भी सुगन्ध दी हमने।
लोगों ने देखा सदा प्रशंसित भीड़ में घिरे-
तन्हाईयों में ही मगर गुजारी जिन्दगी हमने॥

ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है भारत में

❑ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भारत की उन्नति के लिये वैदिक धर्म का प्रकाश किया, अनेक

ग्रन्थ लिखे, शास्त्रार्थ व उपदेश किये, इसके लिए उन्होंने सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। भारत देश व समाज तथा मानवमात्र के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे। भारत की उन्नति हेतु इतिहास पर भी प्रकाश डाला। अंग्रेज जब भारत की संस्कृति इतिहास व गौरवगाथा को भारतीय प्रजा के सामने धूमिल कर रहे थे तब ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भारत के गौरव का गुणगान किया और बताया, भारत सोने की भूमि अर्थात् स्वर्ग भूमि था यहाँ चक्रवर्ती शासक थे। विदेशी यहाँ आज्ञानुसार आते व जाते थे।

भारत की परतन्त्रता से पूर्व जितने भी अन्वेषण हुये यहीं पर हुये। विदेशों में लोग जंगलियों की भांति रहते थे। अब भी डॉ. जगदीशचन्द्र वसु, आर्यभट्ट भारत के ही वैज्ञानिक थे। उससे पूर्व वराहमिहिर, लगध मुनि, गौतम, कणाद, ईसवी से पूर्व चरक, सुश्रुत, अग्निवेश, भेल, पाराशर, हारीत यहीं हुये।

सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास में महर्षि जी ने भोज-प्रबन्ध का वर्णन करते हुए लिखा है-

''राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे-ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान यन्त्र कला युक्त बनाया था कि जो कच्ची घड़ी में ग्यारह कोस और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोस जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कला यन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था....।''

अवैदिक मत-मतान्तरवादी पृथ्वी का आकार विभिन्न प्रकार से मानते हैं। कोई इसे चपटी मानता, कोई शेषनाग (सर्प) के ऊपर टिकी मानता है, कोई बैल के सींग पर टिकी हुई मानता है जबकि वेद में जैसा लिखा है आज के वैज्ञानिकों ने भी वैसा ही अन्वेषण करके बताया है। सवप्रथम तो गैलीलियों ने ही पृथ्वी को गोल माना था इस पर वहाँ के पादरी रुष्ट हो गये थे, परन्तु गैलीलियो के पश्चात् न्यूटन ने जब अन्वेषण कर गोल बताया और यह भी बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है तब उन्होंने कहा कि गैलीलियो की खोज ठीक थी।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद में सब सत्य विद्यायें हैं, जितनी भी सत्य विद्यायें हैं, वह सब वेद में हैं। पृथ्वी के विषय में सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में महर्षि ने वर्णन किया है-

आयं गौः प्रश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ (यजु० 3.6)

अर्थात् यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों ओर घूमता जाता है इसलिए पृथ्वी घूमा करती है।

पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमती हुई सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, अपनी धूरी पर घूमने से दिन व रात होते हैं, जो भाग सूर्य के सामने आता है वहाँ दिन व शेष में रात होती है। जब हमारे यहाँ दिन होता है तो अमेरिका (पाताल) में रात होती है।

यही नहीं वेद में समस्त ज्ञान-विज्ञान है, भारत ज्ञान-विज्ञान युक्त था। यहाँ का इतिहास भी गौरवशाली है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन किया है कि चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुये हैं।

''यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्ध्रयश्व, अश्वपति, शशविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीश, ननक्तु, सर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखें हैं।''

चक्रवर्ती शासकों की गाथाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। उनकी वीरगाथाओं को आज जन-जन में सुनाया जाता है। यहाँ तक कि अनेक लोककथाएँ आदिवासी क्षेत्रों तक में प्रचलित हैं वहाँ विभिन्न अवसरों पर स्त्री-पुरुष नृत्य व गायन द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

जैसा कि हम भ्रमवश विदेशों को, वहाँ की संस्कृति को, भाषा को महत्त्व देने लगे हैं, यदि वेद व वेदांग एवं संस्कृत साहित्यों का अध्ययन करें तो हमारे यहाँ ज्ञान-विज्ञान का अथाह भण्डार है। यदि वेद-वेदांगों का, संस्कृत के समस्त साहित्यों का अध्ययन विद्यालयों में पठन-पाठन हेतु लगाया जाये व इन पर अन्वेषण करें तो पुनः गौतम, कणाद, लगध मुनि, वराह मिहिर जैसे महान् विद्वान् भारत भूमि पर होने लगेंगे। परन्तु हम पाश्चात्यता का आज अन्धानुकरण कर रहे हैं। गणित विद्या हमारे यहाँ से विदेशों में गई, ज्यामेट्री, खगोल शास्त्र, ज्योतिष (वैदिक), हमारी ही देन है। आज वही ज्ञान अर्जन करने हम विदेशों में जाते हैं।

शेराल्ड पोलाक जैसे विद्वान् आज भी मैकाले की भांति हमारी भाषा संस्कृत को, हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों को असत्य व निरर्थक बताते हैं। जैसा कि हमारे यहाँ विद्वानों ने इस विषय पर प्रकाश डाला है।

महर्षि ने ग्यारहवें समुल्लास के अन्त में आर्यावर्तदेशीय राजवंशावली का वर्णन किया है। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। आज हम अपने इतिहास के वास्तविक स्वरूप से दूर हैं। जैसा कि पुराणों में श्रीकृष्ण को बताया है हमें अपने इतिहास का अन्वेषण व शोध कर शोधग्रन्थ के रूप में प्रकाशित करना चाहिए। महर्षि जी ने भी लिखा है-"हमारे आर्य सज्जन लोग इतिहास और विद्या पुस्तकों का खोज कर प्रकाश करेंगे तो देश को बड़ा ही लाभ पहुँचेगा।" (स०प्र० एकादश समु०)।

कहने का तात्पर्य यह है कि हम धन, बल, ज्ञान, विज्ञान व गौरव में विश्व में सर्वोपरि थे। महाभारत युद्ध के पश्चात् बहुत कुछ खो दिया। आज हम अपने स्वर्णिम प्राचीन उस वैभवशाली भारत को पुनः विश्व का सिरमौर बना सकते हैं। आवश्यकता है वेद-वेदांगों व संस्कृत-साहित्यों की ओर लौटकर चलने की, संस्कृत भाषा को समझने की, इतिहास को खोजकर शोध करने की। आज भी जगा भाट आदि द्वारा वंशों को समय-समय पर लिखा जाता है, उसे भी अध्ययन कर इतिहास की परतें खोल सकते हैं। भारत की मार्शल जातियों का इतिहास आज भी लिखा जाता है जो अध्ययन योग्य है। आर्यों का इतिहास अति विस्तृत है। राजपूत, जाट, गुर्जर, सिख, मराठे, इनकी वंशावलियां आज भी प्रचलित हैं, जो राष्ट्र हेतु गौरव की मिसाल हैं।

विदेशियों का यहाँ शासन रहा वह कभी भी भारत का भला नहीं चाहते थे इसलिए वह यहां से धन-स्वर्ण आदि लूटकर ले गये। उनका प्रयोजन ही लूटपाट व मतान्तरण अत्याचार करना था। उन्होंने तलवार के बल पर जनता का रक्त बहाया। यहाँ हमारे ऐतिहासिक स्मारकों, भवनों, आश्रम व गुरुकुलों को नष्ट किया। तक्षशिला व नालन्दा के खण्डहर आज भी इसका उदाहरण हैं। यहाँ संग्रहालयों को आग की भेंट कर दिया। महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ, ज्ञान-विज्ञान को यहाँ से विदेशों में ले गये। यहाँ ज्ञान का भण्डार था आज वही हमारी संस्कृति व इतिहास को रामकृष्ण आदि महापुरुषों को निरर्थक व काल्पनिक बता रहे हैं।

हमें आज पुनः अपने प्राचीन ग्रन्थों साहित्य आदि को खोजना चाहिये। महर्षि ने जैसा कि महाभारत से युधिष्ठिर से लेकर पांडवों की वंशावली खोजकर सत्यार्थप्रकाश में स्थान दिया। जिसके आधार पर हम अपने इतिहास के गौरव को समझ सकते हैं। यह प्राचीन ज्ञान अनेक प्रकार से साहित्य, स्मारक, प्राचीनकाल की सामग्री के रूप में है। आर्यों का इतिहास आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी जगा आदि द्वारा लिखा जाता रहा है जिसकी ओर ध्यान देना चाहिए।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

आचार्य बलदेव जी एवं स्वामी सत्यपति जी के प्रमुख शिष्य आचार्य ज्ञानेश्वर जी की जीवन यात्रा

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आज जिस व्यक्तित्व आचार्य ज्ञानेश्वर जी को हम ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता एवं आर्यजगत् का

उद्भट विद्वान् मानते हैं। उसका इस पवित्र कार्य में पदार्पण उस समय हुआ जब वह एम.ए. (प्रथम वर्ष) में अध्ययन कर रहे थे। आप आर्यसमाज की उच्चकोटि की योगनिष्ठ विभूति स्वामी सत्यपति जी एवं आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। स्वामी सत्यपति जी इनसे बहुत प्रभावित हुए और वह इस स्वर्ण को कुन्दन के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। स्वामी जी ने इन्हें आदेश दिया कि वह आर्यजगत् के आज के व्याकरण के सूर्य आचार्य बलदेव नैष्ठिक जी के पास व्याकरण का ज्ञान ग्रहण करने के लिए प्रस्थान करें। आचार्य बलदेव जी के सान्निध्य में लगभग साढ़े छह वर्ष तक व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया तथा वहाँ कुछ अध्यापन भी किया। उनका अध्ययन यहाँ तक सीमित नहीं रहा बल्कि निम्नलिखित शास्त्रों का अध्ययन विभिन्न विद्वानों ने किया-

(1) **निरुक्त शास्त्र का अध्ययन**-विनम्रता एवं सरलता की मूर्ति गुरुकुल कांगड़ी के उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार से निरुक्त शास्त्र का अध्ययन किया।

(2) **काव्य अलंकार व छन्द शास्त्र का अध्ययन**-योगनिष्ठ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी से।

(3) **दर्शनों एवं उपनिषदों का अध्ययन**-पूज्य स्वामी सत्यपति जी के साथ विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण करते हुए अध्ययन किया। इसके अनन्तर डेढ़ वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार एवं योगशिविरों का आयोजन किया। पूज्य स्वामी सत्यपति जी की प्रेरणा से उच्च स्तर के योगाभ्यास व दर्शनों के अध्ययन हेतु 1986 में आर्यवन रोजड़ में आयोजित दर्शन योग प्रशिक्षण शिविर जो लगभग ढाई वर्ष तक चला, उसमें सम्मिलित हुए। इनकी योग्यताओं से प्रभावित होकर स्वामी जी इन्हें और उपाध्याय श्री विवेक भूषण (वर्तमान में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक) जी को दर्शन योग महाविद्यालय चलाने का दायित्व सौंपा। इस महाविद्यालय की विशेष उपलब्धि यह रही कि यहाँ से लगभग 60 से अधिक आदर्श दार्शनिक विद्वान् एवं 13 संन्यासी भी आर्यजगत् को दिये हैं।

क्रियात्मक ध्यान योग एवं यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन-आपने अपने जीवन काल में देश-विदेश में सैकड़ों क्रियात्मक ध्यान योग प्रशिक्षण शिविर एवं लगभग 30 से अधिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया। अभी-अभी एक अक्तूबर 2017 को आपने आर्यसमाज बसई गुरुग्राम में एकवर्षीय (सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक) यज्ञ का प्रारम्भ एवं उद्घाटन महात्मा वेदपाल आर्य पानीपत वाले के सहयोग से किया। जिसकी पूर्णाहुति 30 सितम्बर 2018 को होगी। इस कार्यक्रम में आचार्य ज्ञानेश्वर जी के अतिरिक्त संसद सदस्य श्री धर्मवीर जी एवं हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री कैप्टन अभिमन्यु जी भी इसमें सम्मिलित हुए। मैं अपने आपको आज गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ कि उस उद्घाटन के समय मुझे भी आचार्य ज्ञानेश्वर जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

वे दृढ़प्रतिज्ञ महामानव थे-एक घटना जो काफी वर्षों पूर्व हुई थी यदि मैं उसका वर्णन नहीं करता तो मेरी कृतघ्नता होगी। आज से कई वर्ष पूर्व जब देहली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ तब आयोजन के पश्चात् विश्व भर (भारत के अतिरिक्त) से पधारे प्रतिनिधियों का आतिथ्य करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। जब यह सम्मान समारोह मेरे निवासस्थान पर चल रहा था उसी समय मुझे आचार्य ब्र० राजसिंह जी ने सूचित किया कि महात्मा वेदपाल जी गुरुग्राम में नवम्बर के दूसरे या तीसरे सप्ताह में आचार्य ज्ञानेश्वर जी द्वारा एक विशेष यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करना चाहते हैं। मैंने

महात्मा वेदपाल जी से कहा, ''महात्मा जी यह अभी संभव नहीं है, एक तो हम अभी-अभी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पर्याप्त शक्ति लगा चुके हैं, दूसरी ओर आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम (जिसका उस समय मैं प्रधान था) में कुछ दिन पूर्व एक प्रस्ताव पास हुआ था कि कोई विशाल कार्यक्रम नवम्बर-दिसम्बर में न रखा जाये क्योंकि इससे हमारा प्रतिवर्ष होने वाला स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह प्रभावित होगा।'' महात्मा वेदपाल जी के इस प्रस्ताव से हम सहमत न हुए। हमने महात्मा वेदपाल जी से प्रार्थना की कि वह इस कार्यक्रम को जनवरी-फरवरी मास में ले जायें। परन्तु वे हमसे सहमत न हुए। बात आचार्य ज्ञानेश्वर जी तक पहुंची। मैं आचार्य ज्ञानेश्वर जी के पास गया, अपनी असमर्थता व्यक्त की परन्तु उनके चेहरे पर कोई उद्विग्नता के भाव न थे, उन्होंने इतना कहा, ''आर्य जी, यह कार्यक्रम का निश्चय तो महात्मा वेदपाल जी कर चुके हैं, आप बताइये, आप व्यक्तिगत रूप से सहयोग देंगे या नहीं।'' मैंने कहा, ''आचार्य जी, मैं न केवल भाग लूँगा, बल्कि जो संभव होगा, सहयोग भी करूँगा।'' आचार्य जी दृढ़ता एवं निष्ठा के कारण वह कार्यक्रम अत्यधिक सफल हुआ। बहुत से यज्ञप्रेमियों ने दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक यज्ञ करने का संकल्प किया। वह जो कार्य उन्होंने एक सप्ताह के प्रशिक्षण शिविर में कर दिखाया, हम संभवत: कई वार्षिक उत्सव करके भी नहीं कर सकते थे। यह उनके दृढ़प्रतिज्ञ होने का साक्षात् प्रमाण था। वे जिस पवित्र कार्य को करने की ठान लेते थे ईश्वर उनके कार्य में पूर्ण सहयोगी बन जाता था, क्योंकि उनके किसी भी कार्य में स्वार्थ नहीं परमार्थ होता था।

अन्य शिविर एवं प्रकाशन-इसके अतिरिक्त आचार्य जी ने बहुत से किशोर चरित्र निर्माण शिविरों में युवक-युवतियों के व्यक्तित्व विकास एवं युवाशक्ति को वैदिक धर्म से सम्बद्ध किया। योग एवं अध्यात्म संबंधित साहित्य, ग्रन्थ, पुस्तकें, चार्ट, कलेंडर, फोल्डर, पत्रक आदि लाखों की संख्या में प्रकाशित कराकर देश-विदेश के हजारों घरों-संस्थाओं को नि:शुल्क वितरण कराये।

भवन निर्माण सहयोग-आर्यवन रोजड़ में भव्य वानप्रस्थ साधक आश्रम जिसमें आधुनिक सुविधाओं से युक्त पचास से अधिक कुटीर, विशाल भूगर्भ ध्यान कक्ष, सभाखण्ड, भोजनालय आदि का निर्माण एवं संचालन किया। एक विशेष योजना अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र जिसमें यज्ञ में प्रयुक्त जड़ी-बूटी एवं पात्रों की प्रदर्शनी, विडियो थियेटर तथा यज्ञशाला आदि का निर्माण कराया जिसमें प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखण्ड अग्निहोत्र विगत दो वर्षों से चल रहा है।

वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार-आचार्य जी ने जहां देश के अनेक प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार तो किया ही, साथ-साथ 28 बार विदेश यात्रा करके वैदिक धर्म का नाद गुंजायमान किया। मुझे भी एक-दो सप्ताह तक मारीशस के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आदरणीय आचार्य जी का आतिथ्य आदरणीय बहिन डॉ० उषा शर्मा 'उषस' जी को प्राप्त था। मैं भी अपनी पत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या सहित बहिन उषा जी के उनके मारीशस प्रवास पर रह रहा था। आचार्य जी प्रतिदिन जब भी अपना सत्संग करते थे उसमें जहां वे अध्यात्म की चर्चा करते थे, इसके अतिरिक्त वे सभी साधकों को राष्ट्रप्रेम की शिक्षा भी दिया करते थे। वे कहा करते थे, ''आर्य जी, साधक वही सफल होता है जो राष्ट्र के प्रति समर्पित भी हो।'' वे सदैव इस सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की मुख्य पुस्तक सत्यार्थप्रकाश का उद्धरण अवश्य दिया करते थे जिसमें यह बताया गया है कि विदेशी राज्य यदि पिता के समान हितकारी ही क्यों न हो, स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं हो सकता।

अन्य न्यासों में भूमिका एवं विपत्तिकाल में सहयोग-आपने दर्शन योग महाविद्यालय तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम जैसी परियोजनाओं के साथ-साथ विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास, वैदिक आध्यात्मिक न्यास, विचार टी.वी. आदि संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया। इसके अतिरिक्त आचार्य जी आस्था चैनल के माध्यम से अपनी ओजस्वी वाणी का रसास्वादन यदा-कदा कराते रहते थे। कच्छ का भूकम्प, सूरत की बाढ़ का प्रकोप आदि प्राकृतिक आपदाओं में पीड़ितों की सहायता का कार्य भी विशाल स्तर पर किया।

आज आचार्य जी हमारे मध्य नहीं रहते परन्तु उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध

क्रमशः पृष्ठ 13 पर......

भक्त की दृष्टि

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

ओ३म् अम्भो अमो सहः सह इति त्वोपास्महे वयम्।

यह अथर्ववेद का मन्त्र है जिसका भावार्थ है "हे भगवन्! आप सबमें व्यापक शान्तस्वरूप और प्राण के भी प्राण हैं तथा ज्ञानस्वरूप और ज्ञानदेने वाले हैं। सबके पूज्य, सबके बड़े और सबके सहन करने वाले हैं। इस प्रकार का आपको जानके हम लोग सदा उपासना करते हैं।"

एक भक्त प्रभु को ऐसा मानता व जानता है कि वह सर्वव्यापक है। मेरे अन्दर, बाहर, ऊपर-नीचे, आगे, पीछे, दाएं, बाएं सब ओर विद्यमान हैं। मैं उसमें डूबा हुआ हूँ जैसे जल में मछली होती है। उस प्रभु को इस दृश्य जगत् में अनुभव करता है। अपने प्राणों में भी उसी को अनुभव करता है कि इनको चलाने वाला वह प्रभु ही तो है। वह ज्ञान का भण्डार है तभी तो हमें वेदों का ज्ञान दिया है संसार का एक-एक पदार्थ, एक-एक जीव कितनी पूर्णता से ज्ञानपूर्वक बनाया है व सबको गति भी दे रहा है। चाहे वह सूर्य हो व चांद हो, सितारे हों या पृथ्वी हो, जड़ पदार्थ हों अथवा चेतन हों, सब कितने नियम से कार्य कर रहे हैं। प्रभु महान् से महान्, बलवान से बलवान, विद्वान् से विद्वान्, धनवान से धनवान हैं। सबके बड़े व पूजनीय हैं। अतः हम सब भी प्रभु में डूबकर उसकी उपासना करें।

एक प्रभु का भक्त है जो सदा सब स्थान पर प्रभु के दर्शन करता है। वह दीवाना-सा हो जाता है। जब संसार को देखता है तो हर पदार्थ में ब्रह्म ही दीखता है। हर वस्तु के कण-कण में ब्रह्म का ठिकाना नजर आता है। पेड़ों पर ढूंढ़ता है तो पेड़ के हर पत्ते में उसकी कारीगरी देखकर कह उठता है कि फूलों की काया में भी मेरे प्रभु आप ही बैठे हो, सूर्य, चांद, सितारों में देखता है तो वहाँ भी ओ३म् के प्रकाश को देखकर कह उठता है कि वाह, तू तो यहाँ पर भी विराजमान होकर इन सबको प्रकाश और गति दे रहा है। फिर छोटे-बड़े हर जीवों को देखता है तो पाता है कि इन सब में प्राण चल रहे हैं। इन प्राणों को कौन चला रहा है। तब उसे पता चलता है कि सबके हृदय में वही छुपकर बैठा है तभी तो इन चर्मचक्षुओं से नजर नहीं आता है। वह तो हृदय से आत्मा से अनुभव करने पर ही दर्शन देता है। बस भक्त वाली दृष्टि बनानी पड़ती है।

इस प्रकार देखते-देखते वह भक्त प्रभु के ध्यान में मस्त हो जाता है। उसे हर ध्वनि में ओ३म् की धुन सुनाई देती है। जहाँ भी यज्ञ-हवन की सुगन्धि हो, सत्संग चल रहा हो, वहीं पहुंच जाता है। जहाँ साधक प्रभु के ध्यान में बैठे हों और मिलकर प्रभु की भक्ति कर रहे हों, वहां वह भी प्रभु प्रभु का गुणगान करने लगते हैं। उस पर प्रभु की भक्ति का ऐसा जादू चल जाता है कि वह अमन में, चमन में, नमन में, सबमें उस प्यारे प्रभु का मनन चिन्तन करने लगता है और उसी में मस्त हो जाता है।

उसी मस्ती में देखता है कि कण-कण में विद्यमान प्रभु की तो बहुत निराली शक्ति है। उसका न कोई रूप है, न रंग है, न आकार है, न भार है, न ही कोई हाथ, पांव, नाक, कान, आंख वाला शरीर है, न उसे भूख-प्यास लगती है, न राग है, न द्वेष है, न ही छल-कपट, चोरी करता है, न झूठ बोलता है, न ही जले, कटे और न ही रोगी होकर मरता है। वह तो नित्य है, चेतन है, निराकार है, सर्वव्यापक है और अन्तर्यामी है। उससे हम मन की बातें छिपाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वह तो हर समय हमें देख रहा है, सुन रहा है, समझ रहा है, जान रहा है। तभी तो वह सबके साथ न्याय कर पाता है। अच्छे बुरे फल देकर (सुख-दुःख रूप में) सब के साथ न्याय करता है। इतना शक्तिशाली व महान् है वह प्रभु।

वह प्रभु एक दिन प्राणी को उपदेश देता है कि देख वह मृग पानी के लिए मरुभूमि में भागता फिरता है। सुन्दर चमकती हुई बालू को पानी समझकर आगे और आगे भागता है। परन्तु पानी न मिलने पर प्यासा ही मर

जाता है। तेरी भी वही अवस्था है। सदा भौतिक सुख की चाह में यही सोचता है कि धन में, भोगों में, इच्छाओं की पूर्ति में ही सुख है। इसी होड़ में दौड़ता-फिरता है, कमाता रहता है। फिर अन्त में सब कुछ यहीं पर छोड़-छाड़ कर संसार से विदा हो जाता है। हे प्राणी, आनन्द तो तेरे भीतर है जिसे तू भोगों में ढूंढ़ रहा है। तू मेरी शरण में आ, मेरा मित्र बन जा, तू अपने आपको, अपने हर कार्य को मेरे अर्पण कर दे, जब तेरा भार तुझ पर नहीं होगा तो तू सब चिन्ताओं से मुक्त हो जाएगा। फिर तू आनन्द ही आनन्द पाएगा।

हे प्राणी! यदि तू ओ३म् नाम को बिसरा देगा तो जीवन में दु:ख ही पाएगा। विषय-भोगों की खाई में गिरकर चोटें ही चोटें खाएगा। यदि तूने अपनी जीवन शैली नहीं बदली और वेदमार्ग पर अग्रसर नहीं हुआ तो अन्त में पछताएगा। यदि तू भोगों का दास बना रहा तो समझ ले कि सुख कोसों दूर है। तू रोता हुआ जग में पैदा हुआ था और रोता हुआ ही जग से चला जाएगा। तेरा हित इसी में है कि तू भलीभांति समझ ले कि भोगों में सुख नहीं है। सच्चा सुख और आनन्द तो ओ३म् के नाम में ही है। इसे पा ले और आनन्दमग्न हो जा।

ओ३म् की उपासना महान् है क्योंकि एक ओ३म् ही सर्वशक्तिमान् है और सबको शक्ति देने वाला है। वह हमारी वाणी का भी वाणी है। उसकी शक्ति से ही तो यह जिह्वा बोल पाती है। वह तो मन का मन है तभी तो प्राणी सोच समझ पाता है। वह चक्षु का भी चक्षु है, वह प्रकाशमान है। उसकी ज्योति से हम देख पाते हैं। श्रोत्र का भी श्रोत्र है। हमारे प्राणों का प्राण भी तो वही है। उसी की शक्ति से ही तो हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, देह आदि सब कार्य करते हैं। हमारी आत्मा को ज्ञान-बल-क्रिया करने की शक्ति प्रभु ही तो दे रहे हैं। वो ही महान् और सर्वशक्तिमान् हैं।

जब तक हमारे तन में श्वास चल रही है हम अपनी रसना का सदुपयोग करते हुए ओ३म्-ओ३म् ही बोलते रहें। जब तक जिह्वा और मन कार्य कर रहे हैं तब तक प्रभु का सिमरन करते रहें, क्योंकि अन्त समय में यह रसना साथ न दे, यह हिले न हिले, कुछ पता नहीं। प्रभु ने हमें सुन्दर-सुन्दर पदार्थ अन्न, दूध, फल, सब्जियां, मेवे आदि दिए हैं। हम इनका अकेले भोग न करें बल्कि बांटकर खाएं, त्यागभाव से इनको भोगें। अच्छी वाणी से प्रेम बांटते चलें। नित्यप्रति हमारे जीवन में नयापन हो। प्रभु प्रेम का अमृत हम सब मिलकर पीएं, पित्य पीएं, अन्त समय का क्या पता कुछ हो पाए या न हो पाए।

हमारी असली मंजिल तो ओ३म् ही है। हमारे जीवन का किनारा ओ३म् ही है। हमें अपने जीवन का हर पग ओ३म् की ओर बढ़ाना है तभी हम जीवनमुक्त होकर मोक्ष की राह को पा सकते हैं। हमारा जीवन तो कांटों की नैय्या है, जबकि ओ३म् का भजन फूलों की शय्या है। इसलिए ओ३म् नाम का गुणगान करते चलें। ओ३म् की राह तो बड़ी निराली है, अद्भुत और सुख देनेवाली है। ओ३म् नाम में ही शान्ति और आनन्द है।

उस परमपिता के द्वार पर हम जाकर तो देखें, उसे जरा अपना बनाकर तो देखें, फिर देखो कि कैसे अन्त:करण की नगरी को वह बसा देंगे, सजा देंगे, संवार देंगे। जो हमारे हृदय में अविद्या भरी पड़ी है उसे अद्भुत प्रकाश दिखा के प्रकाशमान बना देंगे। श्रद्धा और भक्ति से उसका ध्यान लगाकर तो देखें, वह भी हमें कृपादृष्टि से निहारेंगे। उनकी शरण में आके तो देखें वह अपनी करुणामयी दृष्टि से ऐश्वर्यशाली बना देंगे।

ओ३म् ही हमारे जीवन का सच्चा सहारा भी है और किनारा भी है। हमें उसी की ओर पग-पग बढ़ना है और उसे पा लेना है।

ओ३म् आनन्दम् गाता जा, गाता जा, गाता जा।
ओ३म् किनारा पाता जा, पाता जा, पाता जा॥

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज धनौंदा (महेन्द्रगढ़) (वेद पारायण यज्ञ)	1 से 3 दिस० 2017
2.	आर्यसमाज औलान्त जिला रेवाड़ी	9 से 10 दिस० 2017
3.	गुरुकुल हरिपुर जुनानी पो० गोड़फूला जिला नुआपड़ा (ओड़िशा)	27 से 29 जन० 2018
4.	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	22 से 25 फर० 2018

–रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

देशभर में चलाई याज्ञिक परिवार की मुहिम

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) के अधिष्ठाता, ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता, आचार्य ज्ञानेश्वर जी का 14 नवम्बर, 2017 को रात्रि

करीब एक बजे हृदयाघात से देहावसान हो गया। उनके पार्थिव शरीर को आश्रम के विशाल भवन में दर्शनार्थ रखा गया। 15 नवम्बर, 2017 को प्रात: 10 बजे उनका अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ।

बीकानेर के एक प्रतिष्ठित स्वर्णकार परिवार में जन्मे आचार्य ज्ञानेश्वर जी एम.ए. प्रथम वर्ष का अध्ययन करते हुए युवा अवस्था में ही आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। लगभग 25 वर्ष की अवस्था में गृहत्याग किया। गृहत्याग के कुछ दिनों बाद ही आर्यजगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी से संपर्क हुआ। उनके निर्देशानुसार आर्ष गुरुकुल कालवा जिला जीन्द में आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक के पास लगभग साढ़े छह वर्ष तक व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया एवं कुछ अध्यापन भी किया।

आपकी प्रेरणा से पूज्य स्वामी सत्यपति जी के साथ विभिन्न प्रान्तों में परिभ्रमण करते हुए पांच दर्शनों व उपनिषदों का अध्ययन किया। इसके अनन्तर डेढ़ वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार और योगशिविरों का आयोजन किया। पूज्य स्वामी सत्यपति जी की विशेष प्रेरणा से उच्च स्तर के योगाभ्यास और दर्शनों के अध्ययन हेतु 1986 में आर्यवन रोजड़, गुजरात में आयोजित दर्शन योग प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित हुए, यह शिविर लगभग ढाई वर्ष चला। प्रतिभागियों की विशेष आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त हुईं जिससे इस योजना को स्थायी रूप देने का विचार किया गया तो पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने दर्शन योग महाविद्यालय नाम से आगे इस कार्य को चलाने का दायित्व उन्हें तथा उपाध्याय विवेक भूषण जी (वर्तमान नाम स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक) को दिया। आपने शिविरों के माध्यम से हजारों याज्ञिक परिवारों का निर्माण किया। किशोर चरित्र निर्माण शिविर एवं युवक एवं युवतियों के लिए व्यक्तित्व विकास शिविरों से युवाशक्ति वैदिक धर्म से सम्बद्ध किया। योग एवं आध्यात्म संबंधित साहित्य, ग्रंथ, पुस्तक-पुस्तिकाएं, चार्ट, कलेंडर, फोल्डर, पत्रक आदि स्वरूप में लाखों की संख्या में प्रकाशित कराके देश-विदेश के हजारों घरों में नि:शुल्क वितरण कराया।

आचार्य जी ने लगभग भारत के अनेक प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार तो किया ही साथ ही साथ 35 बार विदेश यात्रा करके वैदिक धर्म का नाद गुंजायमान किया। आज आचार्य जी हमारे मध्य नहीं रहे, परन्तु उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध का प्रसार कर गए हैं जो हजारों-हजारों महानुभावों को प्रेरणापुंज बनकर उनका मार्गदर्शन करती रहेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके द्वारा प्रसारित की गई वैदिक धर्म के प्रसार को गति मिलती रहे।

–सभामन्त्री

सूचना

सभी शिक्षण संस्थाओं एव व्यापारिक प्रतिष्ठानों को सूचित किया जाता है कि अपनी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान अपने विज्ञापन आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका में देकर लाभ उठाएं। इस पत्रिका के हजारों पाठक हैं तथा देश के विभिन्न राज्यों में इसका प्रचार-प्रसार है।

विज्ञापन शुल्क

पूरा पृष्ठ रंगीन एक अंक का शुल्क 5000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

¼ पृष्ठ का शुल्क 2000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

½ पृष्ठ का शुल्क 3000/- रुपये –प्रबन्धक

आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः भी चले गए

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

थोड़े ही अन्तराल में आचार्य बलदेव जी, ब्र० राजसिंह, डॉ० धर्मवीर व आचार्य ज्ञानेश्वरार्य चले जाने से (दिवंगत होने से) सांगनिक रूप में आर्यसमाज को बहुत हानि हुई है। कम पानी वाले नाले जिस तरह बहते हुए ज्यादा शोर मचाते हैं, उसी प्रकार स्वभाव से निकृष्ट, कम अनुभवी व्यक्ति थोड़ा कार्य करके ही उसे ज्यादा समझकर बहुत शोर मचाते हैं तथा दूसरों के अधिक व गम्भीर प्रयास को नहीं समझ पाते व उसका उपहास उड़ाते हैं तथा उपेक्षा करते हैं। इसके विपरीत आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः उत्तम स्वभाव, बड़े अनुभव के ऐसे धर्मात्मा विद्वान् महापुरुष थे जो गहरे पानी वाली नदी की भांति शान्त भाव से चलते थे, गम्भीर आशय के साथ महान् कार्य करते थे। देश-विदेश में घूम-घूमकर बड़े-बड़े अधिकारियों में भी आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करते थे, यज्ञप्रेमी व यज्ञ का विस्तार करने वाले थे, वैदिक साहित्य का बहुत बड़ी मात्रा में वितरण करते थे। पदस्पर्धा की भावना से अछूते थे। इसीलिए कभी स्वयं अपने कार्य का शोरगुल नहीं करते थे और न ही ऐसा महापुरुष ऐसे अनुयायी तैयार करता है जो वर्चस्व के लिए ऐसा शोरगुल मचाए। वे उत्तम कोटि के ब्राह्मण थे, अपरिग्रह का पालन करने थे, विद्वानों, उपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं को स्वयं दान देते थे। समदर्शी व पक्षपातरहित थे। किसी के भी कहने से किसी कार्यकर्त्ता व विद्वान् के प्रति कोई भी विपरीत विचार नहीं पालते थे। हमें कैसे विद्वानों का अनुसरण करना चाहिए? इस विषय में महर्षि जी सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में एक विशेषता 'आर्द्रचित्त' होने के रूप में लिखते हैं। यह विशेषता आचार्य बलदेव जी, आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः जैसे चुनिन्दा साधुओं में ही दिखाई दी। अनेक नेताओं का स्वभाव ऐसा होता है जो प्रतिष्ठित जानकार कार्यकर्त्ता से मिलकर भी अंजान भाव दिखाते थे, रत्तीभर भी उनके प्रति प्रशंसा या उत्साह नहीं दिखाते। ऐसा अहंवश होता है। आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः अहंशून्य थे। जब भी चन्द मिनट के लिए मुझे मिले, उसी समय कहते थे, **''आप अच्छा लिखते हैं, भगवान् ने आपको अच्छी ऊहा दी है।''** जब मैं उनकी प्रशंसा में कुछ कहने लगता तो बीच में ही रोक कर कहते, **''परमात्मा की प्रशंसा करो।''** उन्होंने **'योगदर्शन'** के अनुवाद में जो लघु पुस्तिका **'योगदर्शनम्'** लिखी है वह मुझे तो अत्यन्त प्रिय व रुचिकर लगती है। ऐषणायुक्त प्रतिस्पर्धाओं वाले एक-दूसरे से डरते हैं, छोटों से भी डरते हैं। वे इस डर से ऊपर थे। अतः कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करते थे। इस संसार में बिगाड़ करने वाले अनेक मनुष्य व संस्थाएं लगे हुए हैं। सुधार करने वालों के कार्य को इस प्रसंग से देखा जाए तो आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः का कार्य बहुत महान् था।

प्रेरक वचन

1. अपने सुधार में ही सभी का विकास निहित है।
2. वर्तमान का सदुपयोग ही विकास का मूल है।
3. पराये कर्त्तव्य की स्मृति में अपने कर्त्तव्य की विस्मृति है।
4. जो स्वयं भयभीत रहता है वही दूसरों को भय देता है।
5. परदोष दर्शन के समान अन्य कोई दोष नहीं है।
6. सुख की दासता के नाश में ही स्वाधीनता है।
7. क्रोधमुक्त त्याग, मोहयुक्त क्षमा, लोभयुक्त उदारता निरर्थक है।
8. वर्तमान की वेदना ही भविष्य की उपलब्धि है।
9. सुख उसी का दास है जो सुख का दास नहीं।
10. अभय वही हो सकता है जिसको किसी का भय न हो।
11. कार्य उसी का सिद्ध होता है जो दूसरों के काम आता है।
12. उदारता में ही सुख का सदुपयोग निहित है।
13. दोषों को यथेष्ट ज्ञान और उनका नाश युगपद है।
14. जो दुःख से भयभीत नहीं होता उसी से दुःख भयभीत होता है।
15. अधिकार की लालसा में ही हिंसा निहित है।
16. एक निष्ठा ही सफलता की कुंजी है।
17. दूसरों के प्रति किया हुआ अपने प्रति कई गुणा हो जाता है।
18. की हुई भूल न दोहराने पर भूल स्वतः मिट जाती है।
19. वस्तुओं का सदुपयोग प्राणियों की सेवा में ही निहित है।
20. कर्त्तव्य की विस्मृति ही अकर्त्तव्य की जननी है।

भेंटकर्त्ता : भलेराम आर्य (सांघीवाले), रोहतक

ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन क्यों किया?

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमारे सनातनी बन्धुओं में मूर्तिपूजा सबसे प्रमुख अनुष्ठान है। शायद उन्हें यह भी पता नहीं है कि भारत में वा विश्व में मूर्तिपूजा का आरम्भ कब व किसने किया। जुबानी जमाखर्च करते हुए कोई भी यह कह देता है कि यह मूर्तिपूजा तो सनातन है। ऐसे लोगों को हमें लगता है कि सनातन शब्द का अर्थ भी पता नहीं होता। यदि मूर्तिपूजा सनातन है तो वह बतायें कि सबसे पुरानी मूर्ति किस देवता की पूजी जाती है। शायद वह राम व कृष्ण को जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है, उनको बतायेंगे। क्या मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर कृष्ण सृष्टि के प्रथम दिन पैदा हुए थे और उसी दिन उनकी मूर्ति की पूजा आरम्भ हो गई थी? यदि ऐसा नहीं है तो मूर्तिपूजा सनातन कैसे हो सकती है? हम सब जानते हैं कि कृष्ण जी द्वापर में और श्री राम त्रेता युग में उत्पन्न हुए। कृष्ण को हुए पौराणिकों के ही अनुसार लगभग 5100 वर्ष हुए हैं। अतः श्री कृष्ण जी की मूर्तिपूजा सनातन अर्थात् सृष्टि की वर्तमान आयु 1.96 अरब वर्ष पुरानी कैसे हो सकती है? इसी प्रकार से दशरथ व श्री राम का समय त्रेता युग अर्थात् द्वापर की पूरी अवधि एवं 5100 वर्ष जोड़कर प्राप्त होता है। इसके अनुसार श्री राम 864000+5100=869100 वर्ष व इससे कुछ अधिक तो हो सकते हैं परन्तु 1,96 अरब वर्ष नहीं हो सकते। अतः मूर्तिपूजा के इतिहास को सनातन कहना असत्य सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि मूर्तिपूजा जैनियों से चली है। महावीर स्वामी का काल अधिक से अधिक 2600 या इससे कुछ अधिक वर्ष ही पुराना है। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे सनातनी भाईयों में मूर्तिपूजा जैन मत के बाद विगत लगभग 2000 वर्षों में चली है। इससे पूर्व ईश्वर के निराकार स्वरूप का योगविधि से ध्यान तथा अग्निहोत्र यज्ञों के द्वारा ईश्वर की उपासना की जाती थी।

अब प्रश्न है कि मूर्तिपूजा है क्या? मूर्तिपूजा एक प्रकार से जड़ पदार्थों की पूजा है। इसके अन्तर्गत पाषाण या धातु की श्री राम व श्री कृष्ण आदि देवताओं के काल्पनिक चित्रों के अनुसार मूर्ति बनाकर उसको ईश्वर मान कर उन पर फूल, पत्र, फल, जल, दुग्ध आदि चढ़ाया जाता है और धूप आदि जला कर व मूर्ति की परिक्रमा को ही ईश्वर की पूजा मान लिया जाता है। बहुत से लोग वहां पर कुछ धन भी रख देते हैं और यह मानते हैं कि यह धन उन्होंने ईश्वर को भेंट किया है। होता यह है कि यह सभी उपयोग की वस्तुएं पुजारी जी की आय का साधन होती हैं। ईश्वर तो एक चेतन सत्ता है। वह सर्वज्ञ और शक्तिमान है। वह सर्वव्यापक, निराकार और सर्वान्तर्यामी है। वह हमारे प्रत्येक कर्म का साक्षी है। वह मनुष्य व सभी प्राणियों के सभी कामों को पूर्ण करने वाला भी है। यह गुण किसी भी जड़ मूर्तियों में नहीं है। ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए यह तरीका वा पद्धति भी बुद्धिसंगत सिद्ध नहीं होती। हमारे जीवित माता-पिता होते हैं तो उन्हें हम भोजन, वस्त्र, धन, सेवा, आज्ञा पालन, परोपकार व सद्कर्मों को करके प्रसन्न करते हैं। यही उनकी पूजा होती है। उनकी मृत्यु के बाद इन सभी कर्मों का करना उचित नहीं होता क्योंकि उनकी जीवात्मा शरीर छोड़कर अपने कर्मों के अनुसार अन्य प्राणी योनियों में चली जाती है अर्थात् उनका पुनर्जन्म हो जाता है जैसा कि इस जन्म में हुआ था। ईश्वर भी हमारे माता-पिता, आचार्य, उपदेशक व राजा के समान एक चेतन सत्ता है। हमें उसे प्रसन्न करना है। यही उसकी पूजा व सत्कार हो सकता है। यह पूजा शब्द ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना के लिए प्रयोग में लाया जाता है। ईश्वर के निराकार होने के कारण माता-पिता के समान हम उसकी सेवा कर नहीं सकते। ईश्वर का शरीर व उदर नहीं होते, अतः उसे फल, फूल, अन्न, जल, वस्त्र, स्वर्ण व रजत धातुओं सहित धन की आवश्यकता ही नहीं है। उसे तो हमारे सत्य स्तुति व प्रार्थना वचनों की आवश्यकता है। ईश्वर की स्तुति व प्रशंसा करना हमारा कर्तव्य भी है। ईश्वर के हम पर असंख्य उपकार हैं। हम ईश्वर के उपकारों से कभी भी उऋण नहीं हो सकते। अतः ईश्वर के प्रति उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना के रूप में कृतज्ञता व्यक्त करना ही हमारा परम कर्तव्य व परमधर्म है। इसके साथ हमें सृष्टि का कर्ता, धर्ता और हर्ता होने के कारण उसकी वेदाज्ञाओं का पालन करना भी धर्म है। वेदों के आधार पर ही ऋषियों ने गृहस्थियों के लिए पंचमहायज्ञों

का विधान किया है। इसका पालन व आचरण ही मनुष्य-धर्म व वैदिकधर्म है। अत: ऐतिहासिक महापुरुषों व विष्णु अथवा शिव आदि वेद वर्णित देवताओं जो कि ईश्वर के गुणवाचक नाम हैं, उनकी कल्पित मूर्तियां बना कर उनकी पूजा आदि करना निरर्थक व अनावश्यक है। वेदादि शास्त्रों में इसका कहीं विधान नहीं है। साधारण मनुष्यों द्वारा महाभारत काल के बाद कुछ ग्रन्थ बनाकर किन्हीं कारणों से मूर्तिपूजा का विधान कर देना स्वीकार्य नहीं हो सकता। इसके लिए वेदप्रमाण, आप्तवचन या ज्ञान का आधार होना चाहिये जो कि हमारे पास नहीं है। इस विषय में कुतर्क करना भी उचित नहीं होता। प्रमाणिक ग्रन्थों के ही प्रमाण स्वीकार होते हैं। अप्रमाणिक, अमान्य व हजार-दो हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के प्रमाण स्वीकार नहीं होते। यह भी बता दें कि हमारे पास आज तक बाल्मीकि रामायण या महाभारत का ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जिसमें इन महापुरुषों ने कहा हो कि मैं भगवान हूं और मनुष्य मेरी आकृति के समान छोटी व बड़ी मूर्ति बनाकर उसमें कथित मन्त्रों के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा कर मेरी पूजा किया करें। यदि ऐसा होता तो फिर महर्षि पतंजलि को योगदर्शन की रचना करने की आवश्यकता नहीं थी और न ही सांख्य व वेदान्त दर्शन आदि की ही आवश्यकता थी। उपनिषदों की व वेदों की भी आवश्यकता उस स्थिति में शायद् नहीं थी।

ऋषि दयानन्द ने 14 वर्ष की अल्पायु में अपने शिवभक्त पिता कर्षनजी तिवारी के कहने पर शिवरात्रि का व्रत किया था। उन्हें शिवरात्रि की महत्ता की पुराण वर्णित कथा सुनाई गई थी। सायं नगर से बाहर एक शिवमन्दिर में उस दिन पिता व अन्य लोगों के साथ पूजापाठ करते हुए रात्रि 12 बजे के कुछ समय बाद जब सभी सो गये थे तो बालक दयानन्द ने देखा कि मन्दिर के भीतर बिलों से कुछ चूहे निकल आये हैं जो शिव की पिण्डी पर भक्तों द्वारा चढ़ायें गये अन्न आदि पदार्थों का भक्षण कर रहे थे। शिवलिंग पर चूहों को बेरोकटोक उछलकूद करते देखा तो उनके मन में प्रश्न व ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि यह शिवलिंग सर्वशक्तिमान चेतन सच्चे शिव का स्थानापन्न नहीं हो सकता। उनका तर्क था कि जो शिव अपने सिर पर से चूहों तक को भगा नहीं सकता तो वह सर्वशक्तिमान व अपने भक्तों का रक्षक कैसे हो सकता है अर्थात् कदापि नहीं हो सकता। **क्रमशः**

आचार्य ज्ञानेश्वर जी....... पृष्ठ 7 का शेष......

सारे संसार में चहुँ दिशाओं में प्रसारित हो रही है। कौन कहता है कि ऐसे व्यक्ति मरते हैं, मरते तो वे हैं जिनका जीवन समाज पर बोझ होता है, आचार्य जी तो सदा-सदा के लिए अमर हो गये हैं। उनकी कृतियाँ, उनका आचरण समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

देश-विदेश का सम्भवत: कोई ऐसा विद्वान्, संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के अधिकारीगण, प्रान्तीय सभाओं के अधिकारीगण एवं अन्य साधक एवं यज्ञप्रेमी नहीं होगा जो आचार्य जी के निधन का समाचार जानकर हार्दिक रूप से दु:खी नहीं हुआ होगा। उनकी अन्त्येष्टि में देश-विदेश के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया तथा श्रद्धांजलि सभा में उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकर्ट की है। मुझे भी उस श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित होने तथा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर प्रदान किया गया।

इस आवागमन के जगत् में जो भी प्राणी आता है उसे एक न एक दिन जाना अवश्य पड़ता है परन्तु कुछ आत्मायें ऐसी होती हैं जो समाज पर एक अमिट प्रभाव छोड़ जाती हैं ऐसी ही दिव्य आत्मा थे आचार्य ज्ञानेश्वर जी। ऐसी पवित्र आत्मा को मैं अपने हृदय की गहराइयों से शत-शत नमन करता हूँ।

आचार्य जी के अन्त्येष्टि संस्कार के पश्चात् न्यासियों ने आचार्य सत्यजित आर्य जैसे तपस्वी, साधक एवं विद्वान् को वानप्रस्थ साधक आश्रम का संचालक घोषित कर जो उत्तम कार्य किया है उसके लिए वे सभी न्यासी साधुवाद के पात्र हैं। अच्छी संस्थायें अच्छे व्यक्तियों के हाथ में ही रहनी चाहिये, इस भाव से यह बहुत उत्तम कार्य न्यासियों ने किया है। मुझे विश्वास है कि आचार्य जी इस उत्तरदायित्व को बहुत ही निष्ठा एवं समर्पण से संभालेंगे।

संपर्क-म०नं० 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गाँव
मो० 09911197073

सत्यार्थप्रकाश
समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

समाचार-प्रभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य ने दी आहुति

सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी०) पानीपत के तत्त्वावधान में वर्ष पर्यन्त (365 दिन, 12 घण्टे प्रतिदिन) चलने वाले गुजरात के बाद भारतवर्ष में दूसरे स्थान हरयाणा में (1 अक्तूबर 2017 से 30 सितम्बर 2018 तक) **'अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र'** आर्यसमाज मन्दिर बसई गुरुग्राम में **माननीय प्रधान मा० रामपाल आर्य** जी दिनांक 11.11.2017 (शनिवार) को पधारे। इस आयोजन के 'यज्ञ प्रभारी' श्री सन्तराम आर्य, दयानन्दमठ रोहतक ने माननीय प्रधान जी को आचमन करवाकर 'यज्ञवेदी' पर आसीन किया। लगभग 30 मिनट तक प्रधान जी व उनके साथ पधारे श्री हवासिंह राठी, श्री कर्णसिंह मोर व श्री नरेन्द्र सिंह ने भी आहुतियां प्रदान कीं। इस अवसर पर आर्यसमाज बसई गुरुग्राम के प्रधान श्री हरिश्चन्द्र आर्य, कार्यकारी प्रधान श्री वेदराम आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलवान सिंह आर्य, श्री समेसिंह आर्य, श्री सहदेव आर्य, श्री मंजीत आर्य श्री रामसिंह आर्य व बाहर से पधारे श्री रामफल आर्य (उत्तर-प्रदेश), बलवान सिंह दहिया पानीपत, राजसिंह मोर सोहना, प्रदीप कादियान बेरी (झज्जर) आदि तथा व्यवस्था संभाल रहे श्री मुकेश पाण्डेय शास्त्री, प्रमोद, सोनू शास्त्री, विशाल, राधेश्याम एवं श्री राजकिशोर शास्त्री, श्याम, अरविन्द फरीदाबाद से पधारे आदि ने भी प्रधान जी के साथ आहुतियां प्रदान की।

इस अवसर पर माननीय प्रधान जी ने कहा कि यह 'यज्ञ' अपने आप में एक दिव्य कार्यक्रम है। आर्यजगत् के प्रख्यात प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय त्यागी तपस्वी, योगनिष्ठ, वैदिक विद्वान् पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, रोजड़ (गुजरात) द्वारा शुभारम्भ और उनके निर्देशन में चल रहे इस अद्भुत आयोजन में आने पर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। इससे लोगों को यज्ञ करने की प्रेरणा मिलेगी। आत्मा की उन्नति होगी। पर्यावरण प्रदूषण से आसपास के क्षेत्र वालों को राहत मिलेगी। युवा पीढ़ी में वैदिक सभ्यता व संस्कृति के प्रति श्रद्धा जगेगी। ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित यज्ञ का प्रचार-प्रसार भी होगा।

माननीय प्रधान जी ने आर्यसमाज बसई के अधिकारियों, सदस्यों व ग्रामवासियों का धन्यवाद व आभार प्रकट किया कि एक वर्ष तक आर्यसमाज मन्दिर बसई गुरुग्राम आदरणीय महात्मा वेदपाल आर्य पानीपत को इस पवित्र आयोजन हेतु दिया है और सभी अपना हर प्रकार का सहयोग लगातार दे रहे हैं और इसके समापन तक देते रहेंगे। यह हमारे लिए एक प्रेरणा है।

माननीय प्रधान जी ने महात्मा वेदपाल आर्य को आश्वासन भी दिया है कि हमारी ओर से (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) इस पवित्र कार्य हेतु हर प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा। हम आपके पीछे खड़े हैं। ऐसे परोपकार कार्यों को करते रहें। हम निकट भविष्य में शीघ्र दल-बल के साथ यहाँ पधारेंगे और घण्टों तक रहेंगे और यह भी कहा कि इस यज्ञ में हम सभी को सहयोग, प्रेरणा, आशीर्वाद की आहुति डलनी ही चाहिए। हमें इस आयोजन पर बड़ा गर्व है कि भारतवर्ष में दूसरे स्थान हरयाणा में यह आयोजन गुरुग्राम में हो रहा है और ग्रामीण आंचल बसई गांव में।

उन्होंने इस अवसर पर विशेषकर इस आयोजन के संयोजक आर्य सुरेन्द्र सिंह तोमर (उत्तर-प्रदेश) एवं श्री दलजीत सिंह, पूर्व एस.ई. बिजली विभाग हरयाणा गुरुग्राम का एवं सहयोगी गणों का अभिवादन व धन्यवाद किया कि इस आयोजन में वर्ष भर में लगभग पचास लाख रुपये खर्च होंगे, की व्यवस्था हेतु आदरणीय महात्मा जी का सहयोग कर रहे हैं। धन्य हैं ये परोपकारी सहयोगी सज्जन जो इस पवित्र कार्य में लगे हुए हैं।

मुझे प्रसन्नता हो रही है कि शुद्ध देसी गाय के शुद्ध घृत उत्तम से उत्तम गुणकारी सुगन्धित सामग्री का, उत्तम नपी-तुली समिधाओं का प्रयोग हो रहा है। सारी सुन्दर व्यवस्था को देखकर मन कह रहा है कि कुछ दिन यहीं रहना चाहिए और आहुतियाँ देते रहें और यज्ञ भगवान का आनन्द लेते रहें। यह जानकर भी मुझे खुशी हो रही है कि गांव के अतिरिक्त दूर-दूर के अन्य स्थानों से भी स्त्री-पुरुष इस यज्ञ में आहुति प्रदान करने आ रहे हैं एवं अपना आर्थिक

सहयोग भी देकर जाते हैं। एक मेला-सा लगा रहता है। वाह महात्मा जी!

माननीय प्रधान जी ने आदरणीय महात्मा जी के इस पवित्र संकल्प के पूर्ण होने की परमपिता परमेश्वर से कामना की कि इन्हें शक्ति, सामर्थ्य, साहस लगातार मिलता रहे। इस अवसर पर माननीय प्रधान जी व आदणीय महानुभावों के इस पवित्र आयोजन में पधारने पर महात्मा वेदपाल आर्य जी ने अभिनन्दन व धन्यवाद किया और भविष्य में भी इसी प्रकार आते रहने का निवेदन भी किया।

संयोजक : आर्य सुरेन्द्र सिंह तोमर, दलजीत सिंह, आर्यसमाज मन्दिर बसई, गुरुग्राम

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 06.11.2017 को दर्शन योग महाविद्यालय, प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक का वार्षिकोत्सव बड़े ही शान्ति व उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

उत्सव में विद्यालय के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, स्वामी जगदीशानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी आर्य, आचार्य प्रियेश जी मंच पर विराजमान रहे।

विद्वानों ने धर्म की रक्षा, यज्ञ व यज्ञमय जीवन जीने की शैली व मानव जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी। उत्सव में वैदिक भक्ति साधन आश्रम के मंत्री श्री वेदप्रकाश आर्य विद्यमान रहे। दर्शन योग महाविद्यालय के व्यवस्थापक वानप्रस्थी श्री निगम मुनि जी ने मंच का संचालन सुचारु रूप से संचालन किया। उत्सव में सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

–निगम मुनि वानप्रस्थ, दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर कुटिया, रोहतक

शोक-समाचार

प्रधान आर्यसमाज रिठाल जिला रोहतक की माता जी का स्वर्गवास दिनांक 16.11.2017 को रात्रि 8 बजे हो गया जिनका नाम चाँदकौर था। वह 82 वर्ष की थी तथा वे दो पोते, चार पडपोते एवं भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को शान्ति प्रदान करे।

–रोशनलाल आर्य, मंत्री वेदप्रचार मण्डल जिला रोहतक

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्ष योग संस्थान सैक्टर-76 ग्रेटर फरीदाबाद का 12वां वार्षिकोत्सव रविवार 19 नवम्बर 2017 को मनाया गया, जिसमें विशिष्ट अतिथि श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री विनय आर्य महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, समाजसेवी ठाकुर विक्रम सिंह आर्य, स्वामी प्रणवानन्द गुरुकुल गौतमनगर, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, श्री जयपाल आर्य, श्री रामबीर प्रभाकर, श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री राजवीर शास्त्री, श्री बालकृष्ण शास्त्री आदि के प्रवचन हुए। श्री वीरपाल आर्य विद्यालंकार ने बालक एवं बालिकाओं तथा नौजवानों को नैतिक, अनुशासन तथा देशप्रेम से सम्बन्धित आगे बढ़कर कार्य करने की प्रेरणा दी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर ने अपने क्रान्तिकारी ओजस्वी भजन के माध्यम से उपस्थित युवाओं एवं आर्यजनों में जोश भर दिया। संस्थान के प्रधान डॉ० ओमप्रकाश योगाचार्य ने अपने प्रवचन के साथ-साथ मंच का सुव्यवस्थित संचालन किया।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक सभा ने महाशय धर्मपाल आर्य एम.डी.एच. आरोग्य मन्दिर के नवनिर्मित भवन का रिबन काटकर उद्घाटन किया। आश्रम में प्रतिदिन चलने वाली शाखा मिर्जापुर गांव के आर्यवीरों, आर्य वीर दल मीसा (पलवल), आर्य वीर दल सराय, गुरुकुल मंझावली एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों ने आसन, मलखम्भ, लाठी, धनुर्विद्या आदि का प्रदर्शन दिखाया।

उत्सव में आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की आर्यसमाजें, जिला पलवल की आर्यसमाजें, दिल्ली की आर्यसमाज के सदस्य एवं स्थानीय ग्रामीण मिर्जापुर, नीमका, बड़ौली, बहबलपुर, सिही आदि से आर्यजनों की भारी उपस्थिति रही। नौजवानों की उपस्थिति प्रशंसनीय रही। आर्यजनों ने आश्रम के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया। स्वामी देवव्रत सरस्वती संचालक एवं अध्यक्ष ने सभी आगन्तुक आर्यजनों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

–ओमप्रकाश शास्त्री, कार्यालय मंत्री

केन्द्रीय कृषि मंत्रालय की टीम ने किया गुरुकुल फार्म का दौरा

कुरुक्षेत्र, 17 नवंबर 2017 : धान की पराली को लेकर मचे घमासान के बीच आज केन्द्रीय कृषि मंत्रालय की एक विशेष टीम हरियाणा कृषि विभाग के विशेषज्ञों के साथ गुरुकुल कुरुक्षेत्र के '**जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म**' पर पहुंची और गुरुकुल द्वारा पराली का बिना जलाए प्रबंधन और गेहूँ की बुआई की पूरी प्रक्रिया को देखा। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों ने गुरुकुल द्वारा प्राकृतिक कृषि के माध्यम से उपजी गन्ना, आलू, चना, धनिया व हरी सब्जियों की फसल का अवलोकन किया और गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि मॉडल की सराहना की। गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने टीम के सभी सदस्यों को महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी द्वारा लिखित '**जीरो बजट प्राकृतिक कृषि**' पुस्तक व उपहार भेंट किये।

यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि धान की पराली जलाने से उठने वाले धुएँ के गुबार से वातावरण प्रदूषित हो चुका है, अब स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशों पर प्रदेश सरकारों ने टीमें गठित कर धान की पराली जलाने पर पूरी रोक लगायी। इसी संदर्भ में आज उक्त टीम गुरुकुल कृषि फार्म को देखने पहुंची जिसमें डॉ. ए. एन. मेसराम, डॉ. एम. एन. सिंह, इंजी. पी. के. पाण्डेय, डॉ. आर. एस. चहल सहित डॉ. कर्मचन्द उप कृषि निदेशक कुरुक्षेत्र, गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी मौजूद रहे। कृषि विशेषज्ञ डॉ. वजीर सिंह ने केन्द्रीय मंत्रालय की टीम को जीवामृत व घनजीवामृत सहित महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के '**जीरो बजट प्राकृतिक कृषि**' मॉडल की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा विगत 12 वर्षों से 180 एकड़ में प्राकृतिक खेती की जा रही है और कभी भी धान की पराली या अवशेषों को जलाया नहीं गया। उन्होंने बताया कि गुरुकुल फार्म पर पराली को मशीनों द्वारा टुकड़े करके खेत की मिट्टी में मिला दिया जाता है जिससे न केवल पराली का उचित प्रबंधन होता है बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बलिदान दिवस सम्पन्न

वर्तमान में हमें स्वामी दयानन्द जैसे सच्चे गुरु की आवश्यकता है। पथभ्रष्ट कर पतन के गड्ढे में गिरांने वाली बीमारी गुरुओं की नहीं। स्वामी दयानन्द जैसे सूर्यरूपी दीपक से लाखों दीपक आलोकित हुए और उन्होंने वैदिक धर्म की सेवा में अपनी आहुतियां दीं। आज के ऋषि बलिदान दिवस (निर्वाण दिवस) पर हम भी ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने का दायित्व अपने ऊपर लें यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस प्रकार के उद्‌बोधन, मनोहर भजनोपदेश आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत द्वारा ऋषि दयानन्द जी के 135वें बलिदान दिवस (दीपावली पर्व) के अवसर पर सेक्टर-23 कम्युनिटी सेंटर में आयोजित भव्य कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में उपस्थित जनसमूह के समक्ष विद्वज्जनों द्वारा रखे गए। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं वैदिक प्रवक्ता डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी, पं० रामचन्द्र जी आर्य, आर्य भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या जी (घरौण्डा) ने उपस्थित धर्मप्रेमी सज्जनों का समुचित मार्गदर्शन किया। श्री ईश्वरसिंह, श्री मनोहरलाल, आर्यवीर दीक्षित, माता शारदा, रत्नमाला जी ने ऋषि के अनगिनत उपकारों के प्रति भजनों एवं गीतों के द्वारा कृतज्ञता और श्रद्धांजलि अर्पित की। वैदिक प्रवक्ता श्री सत्यवीर वेदालंकार जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान चौ० रणधीर सिंह ढुल्ल जी ने कार्यक्रम के आयोजन को सफल बनाने के लिये विद्वज्जनों, उपस्थित जनसमूह/श्रोताओं, सहयोगी महानुभावों का आभार और धन्यवाद किया।

--सुदर्शन आर्य, महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत

विशेष सूचना

आपका शुल्क समाप्त हो गया है--'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सदस्यों से आग्रह है कि जिस माह आपका शुल्क समाप्त हो, कृपया उसी माह में अपना नवीन पंजीकरण शुल्क भेज दें ताकि आपकी सदस्यता समाप्त न हो और आपको 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिकाल गातार मिलती रहे। अपने शुल्क के साथ पत्रिका के लिए वार्षिक शुल्क 200/- रुपये अथवा आजीवन शुल्क 2000/- रुपये। नए सदस्य बनाकर हमें सहयोग प्रदान करें। धन्यवाद।

सम्पादक-'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक, रोहतक

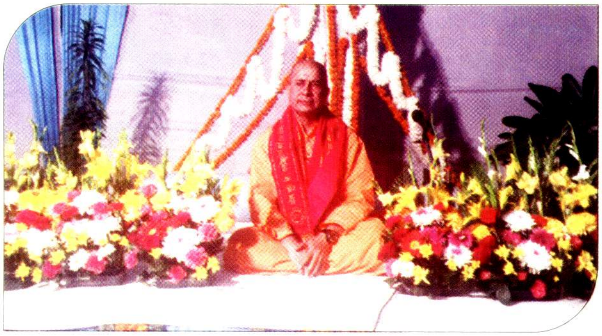

आर्य समाज गुरुग्राम में मुख्य वक्ता स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक।

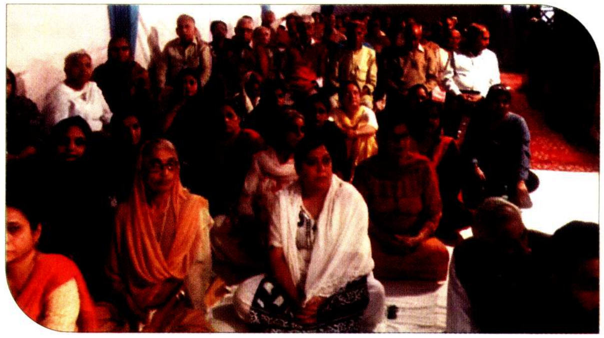

आर्य समाज गुरुग्राम में उमड़ा जनसमूह।

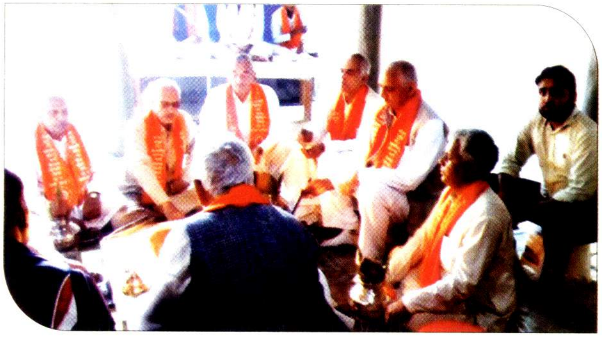

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र आर्य समाज मंदिर बसई में 365 दिन चलने वाले दैनिक यज्ञ में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य ने यज्ञ में दी आहुति।

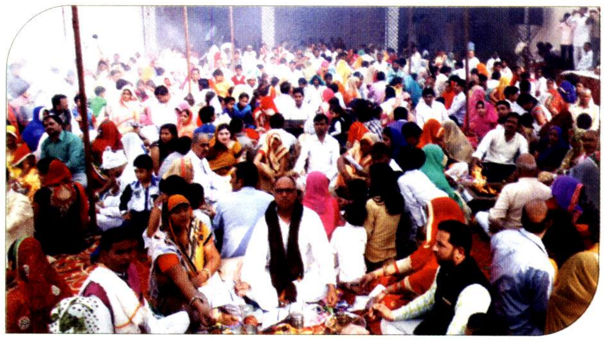

मुस्लिम बहुल क्षेत्र मेवात के नगीना गांव में 46 वेदियों के साथ 151 यज्ञमानों ने किया यज्ञ।

राजकीय कन्या विद्यालय सिसाना में वेद प्रचार कार्यक्रम के दौरान यज्ञ करवाते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

राजकीय कन्या विद्यालय सिसाना में वेद प्रचार कार्यक्रम के दौरान जनसमूह को सम्बोधित करते हुए मा० रामपाल आर्य व रमेश आर्य।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी के वेद प्रचार महोत्सव एवं वार्षिक उत्सव में डा० राजेन्द्र विद्यालंकार।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री उपेन्द्र आर्य का सम्मान करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य, रमेश आर्य, सुभाष सांगवान, रोशन लाल आर्य।

ओ३म्

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

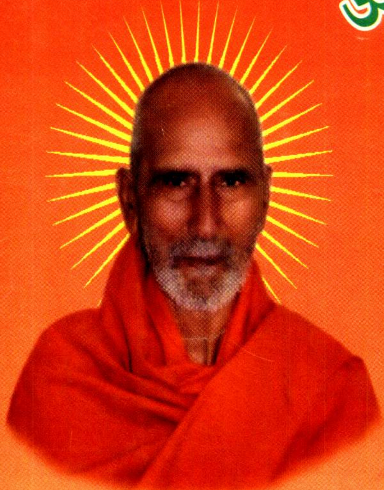

दयानन्द मठ, रोहतक के तत्त्वावधान में
आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 28 जनवरी 2018 (रविवार)

स्थान : दयानन्द मठ, रोहतक

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा